कठपुतली का राजा

ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा सजता
पैरों को लहंगे से ढंकता
धागा फिर पगड़ी से लगता।

जंग चढ़ाई पर है जाना
दुश्मन को है मजा चखाना।

तिक्कड़ तिक्कड़ चाल बताकर
कठपुतली की रानी आती
लक्कड़ का वह हाथ हिलाती
भरसक गुस्से में चिल्लाती

"अरे सोचता क्या है तू
सज-धज कर क्या खूब लड़ेगा?
आएगा जब दुश्मन तेरा
क्या वो तेरे पांव पड़ेगा?"

जंग चढ़ाई पर है जाना
दुश्मन को है मजा चखाना।

ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा सजता
पैरों को लहंगे से ढंकता
लेकर घोड़ा आगे बढ़ता।

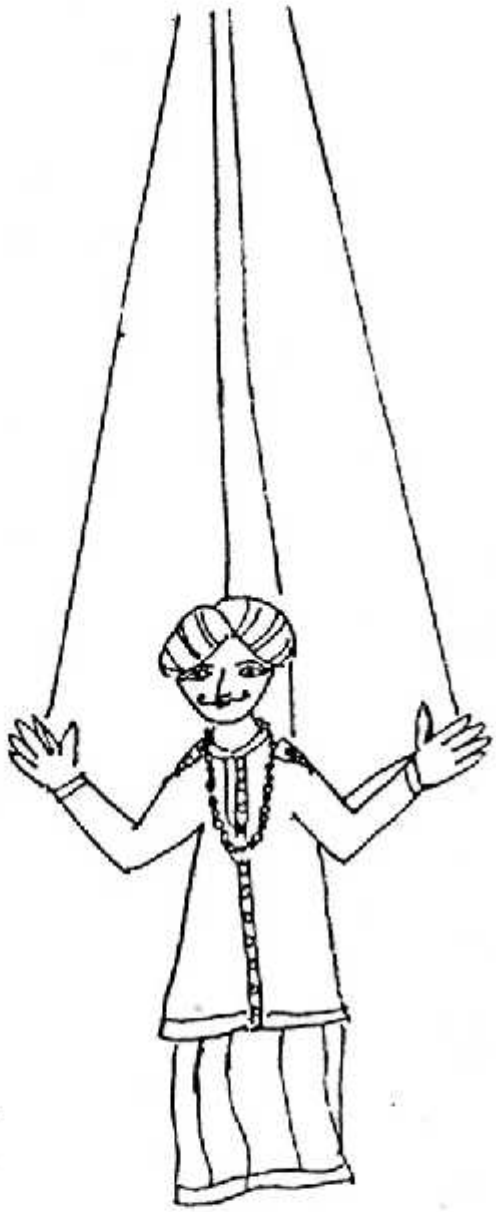

जंग चढ़ाई पर है जाना
दुश्मन को है मज़ा चखाना।

निकल गया जब घुड़सवार
उधर से आई एक पुकार
"भूल गए हो तुम तलवार
भाला रह गया, रह गई ढाल
भाला रह गया, रह गई ढाल।"

ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा चलता
निकल पड़ा है रूप संवार
नहीं है सुनता चीख पुकार।

जंग चढ़ाई पर है जाना
दुश्मन को है मज़ा चखाना।

(तुमने कभी कठपुतली का नाटक देखा है? कठपुतलियां छोटी गुड़ियों जैसी होती हैं। उन्हें एक टेबिल के बराबर मंच पर धागों से नचाया जाता है। कठपुतली से जुड़े धागे कठपुतली नचाने वाले की उंगलियों पर बंधे होते हैं। कठपुतली नचाने वाला ही कठपुतली की तरह आवाज़ निकाल कर बोलता है। कभी कठपुतली तुम्हारे गांव या मोहल्ले में आए तो जरूर देखना।)

(मंच बहुत ज़्यादा बड़ा नहीं है। गुरूजी की टेबिल जितना है।

कठपुतली का राजा घोड़े पर बैठा जा रहा है। वह रंगीन कपड़े और पगड़ी पहने हुए है। और उसका घोड़ा फुदक-फुदक कर और ऊंचा उछल कर चल रहा है।

तभी सामने से दुश्मन आता है। दुश्मन ने काले कपड़े पहने हैं और उसकी बड़ी-बड़ी मूछें हैं। उसके एक हाथ में तलवार है और दूसरे हाथ में काले और सुनहरे रंग की ढाल।

बात करते समय दोनों अपनी गर्दन ज़ोर-ज़ोर से हिलाते हैं।)

राजा : *(राजा की आवाज़ ऊंची और पतली-सी है। ऐसा लगता है कि वो अपनी नाक से बोल रहा है)* दुश्मन आ गया! अरे, मैं तो अपनी तलवार भूल आया। अरे, मैं तो अपना भाला और ढाल भी भूल आया। बाबा रे, अब क्या होगा? बाबा रे!

दुश्मन : *(दुश्मन की आवाज़ भारी भरकम है और जब वो बोलता है तो उसकी मूंछ खूब हिलती है। वो हंसता है)* हा ! हा ! हा ! तूने क्या सोचा था? तू दुश्मन से बच निकलेगा? हा ! हा ! हा !

राजा: दुश्मन भैया, दुश्मन भैया, मैं तुम्हें मज़ा चखाने थोड़े ही निकला था। देखो न, मैं तो तलवार-भाला तक नहीं लाया। मैं तो सिर्फ चेहरा देखने वाला शीशा ही लेकर निकला हूं।

(राजा दुश्मन को शीशा दिखाता है)

दुश्मन : तो क्या हुआ, ले संभाल !

(और दुश्मन राजा के ऊपर टूट पड़ता है। तलवार उठा कर राजा पर वार करने लगता है।)

राजा : रुको!

(दुश्मन वार करता है। राजा वार बचाता हुआ बीच-बीच में बोलता रहता है।)

राजा : सुनो भाई! अरे रुको तो सही! दुश्मन भैया, रुको! वो देखो...

(राजा पीछे की ओर इशारा करता है। वह वार बचाते-बचाते थक गया है और हांफ रहा है।)

राजा : *(हांफते-हांफते)* - वो तुम्हारे पीछे शेर खड़ा है।

(दुश्मन पीछे देखता है। राजा भाग उठता है।)

दुश्मन : *(आगे मुड़ते हुए)* वहां तो कुछ नहीं ...अरे कहां भाग गया, दगाबाज़, ज़रा रुको तो सही! अभी बताता हूं।

(राजा आगे-आगे भागता है। दुश्मन पीछे-पीछे भाग रहा है। भागते-भागते दोनों मंच से बाहर चले जाते हैं। पीछे से एक गीत सुनाई देता है, जिसे कई आवाज़ें गा रही हैं।)

ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा भगता
कहीं वो गिरता कहीं है पड़ता
पैरों में लहंगा जो अड़ता।

जंग चढ़ाई भूल रहा है
दुश्मन उसको ढूंढ रहा है
दुश्मन उसको ढूंढ रहा है।

(राजा भागता-भागता मंच पर पहुंचता है। उसका लहंगा पैरों में लिपट चुका है और वह गिर पड़ता है।)

दुश्मन : हा! हा! हा! तूने क्या सोचा था, तू दुश्मन से बच निकलेगा? वो भी इतना सुंदर लहंगा पहनने के बाद? हा! हा! हा!

(राजा और भी ज़्यादा हांफ रहा है। वह इतना थक गया है कि ज़मीन से उठने की कोशिश भी नहीं कर रहा है

तभी अचानक एक **शेर** *निकल कर मंच पर आता है और दुश्मन के पीछे खड़ा हो जाता है।)*

राजा : दुश्मन भैया, इस बार सचमुच तुम्हारे पीछे शेर खड़ा है।

दुश्मन : हुं ! बड़ा आया शेर की बातें करने वाला।

राजा : नहीं नहीं, सचमुच तुम्हारे पीछे शेर है।

दुश्मन : अभी देखना मेरी तलवार क्या मज़ा चखाती है, तुझे और तेरे शेर को।

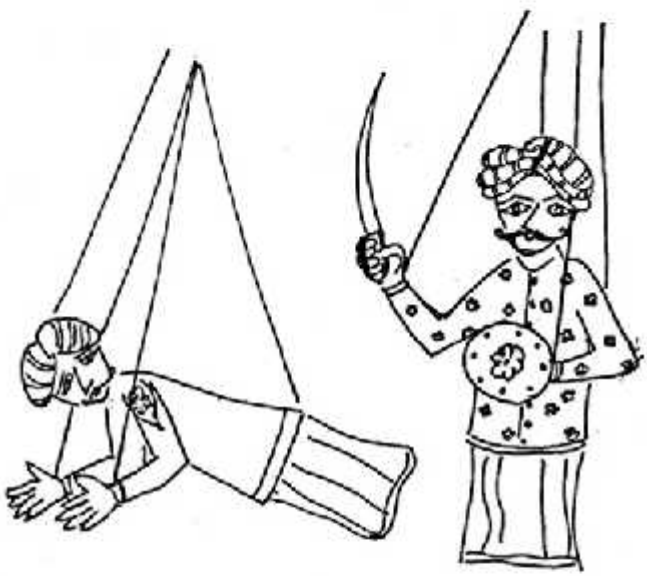

(तभी शेर ज़ोर से दहाड़ता है। दुश्मन मुड़ कर देखता है कि शेर एकदम उसके पीछे खड़ा है।)

दुश्मन : अरे बाप रे, शेर! बचाओ, शेर आ गया! अरे, बचाओ रे बचाओ!

(दुश्मन लपक कर राजा के पीछे दुबक जाता है।)

राजा : मेरा शीशा कहां गया रे?

(राजा झट से चेहरा देखने वाला शीशा निकालता है। शेर उसमें अपना चेहरा देख कर डर के मारे कूद पड़ता है। राजा फिर उसे शीशा दिखाता है।)

शेर : भागो रे भागो! इस आदमी की मुट्ठी में एक और शेर है। मेरा तो कचूमर ही निकाल देगा। भागो!

(शेर भाग जाता है। दुश्मन धीरे-धीरे राजा के पीछे से निकलता है।)

दुश्मन : वाह, राजा भैया! कुछ तो हिम्मत तुममें भी है। दिमाग भी है। मानना पड़ेगा। चलो, करो दोस्ती।

राजा : हां, दुश्मन भैया! कुछ तो डरपोकपन तुममें भी है। चलो, मिलाओ हाथ।

(पीछे से)

ताकर ताकर तबला बजता
कठपुतली का राजा उठता
पैरों को लहंगे से ढंकता
पीठ पे उसकी झाड़न लगता।

दुश्मन को वह जोड़ चुका है
जंग लड़ाई छोड़ चुका है।
दुश्मन को वह जोड़ चुका है
जंग लड़ाई छोड़ चुका है।

● *अपनी कापी में इन सवालों के उत्तर लिखो।*

1. राजा ने लड़ाई पर जाने के लिए क्या-क्या तैयारियां कीं?
2. रानी राजा पर क्यों चिल्लाई?
3. राजा लड़ाई पर कैसे निकला?
4. दुश्मन जब राजा के सामने आया तो राजा क्यों घबराया?
5. राजा ने अपने आप को दुश्मन से कैसे बचाया?
6. राजा ने अपने आप को और दुश्मन को शेर से कैसे बचाया?
7. दुश्मन राजा का दोस्त कैसे बन गया?

- इस कविता और नाटक को ध्यान से अपने-अपने मन में पढ़ो।

- अब एक-एक करके कविता ज़ोर-ज़ोर से पढ़ो, हाव-भाव के साथ।

- नाटक और कविता में कई पात्र हैं। यहां सभी पात्रों के नाम लिखो
- आपस में पात्र तय कर लो। कोई राजा बन जाए, कोई दुश्मन। और भी पात्र चुन लो। अब एक छात्र-छात्रा हाव-भाव के साथ कविता पढ़े। जैसा कविता में लिखा है, वैसा हर पात्र करता जाए। जब नाटक आएगा तो हर पात्र को अपना-अपना डायलाग पढ़ना है और वैसा ही स्वांग करना है।

- क्या तुमने कठपुतली का खेल देखा है? अगर हां, तो लिखो कि उसमें क्या-क्या देखा था।

- यहां हम कठपुतली बनाने के कई तरीके दिखा रहे हैं। तुम इन्हें देख कर कठपुतलियां बनाओ और गुरूजी की मदद से इनके साथ नाटक भी खेलो।

कठपुतलियां बनाने के लिए तुम्हे इन चीज़ों की ज़रूरत पड़ेगी

घास, रस्सी, पेंसिल, क्रेयांस या होली के रंग, गोंद, सुई, कैंची, लकड़ी या बांस, कागज़, पुरानी कापी का पुट्ठा।

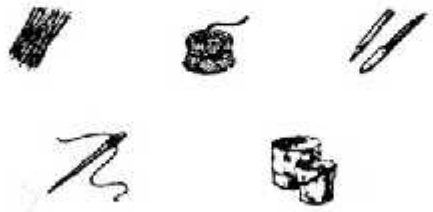

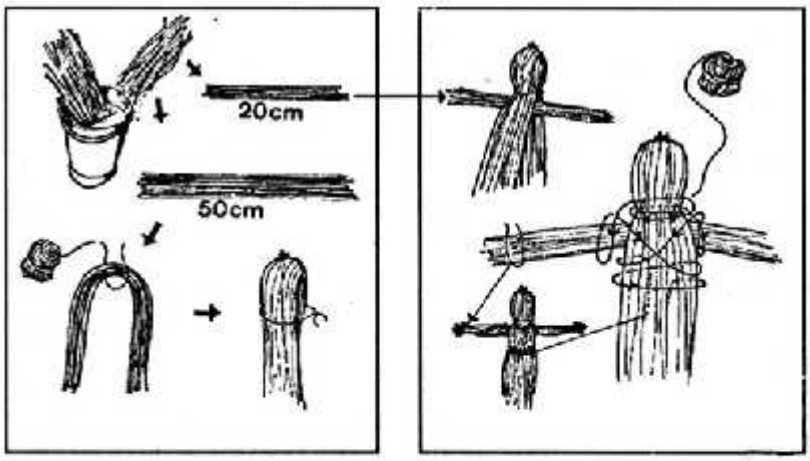

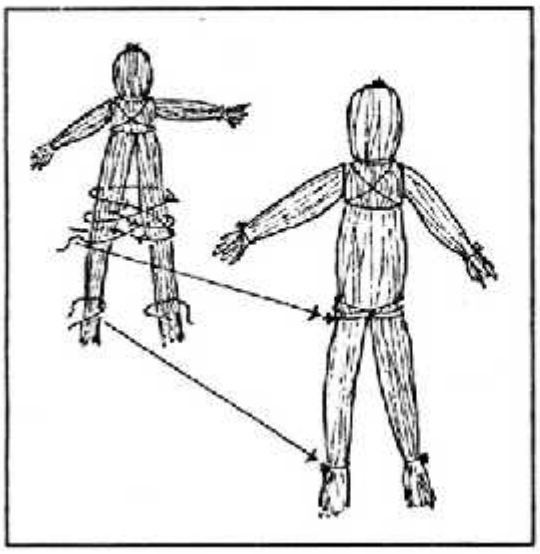

यहां कुछ मुखौटे बनाने के तरीके भी दिए हैं। उन्हें पहन कर भी ये नाटक खेल सकते हो।

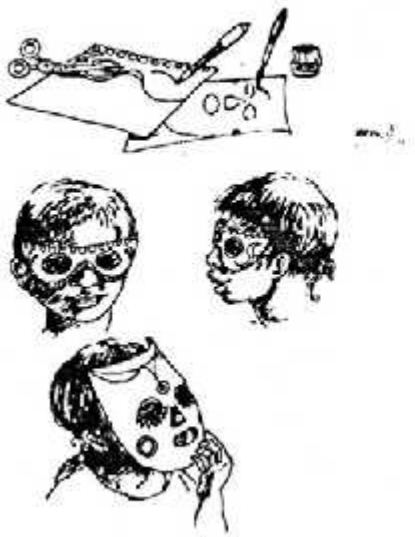

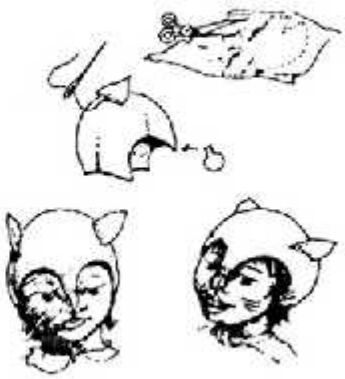

● तुम और भी नाटक बनाओ, जिसे कक्षा के सब लोग मिल कर खेल सकें। हम कुछ सुझाव तुम्हें दे रहे हैं।

1. राजू और उसके दोस्त स्कूल के बाहर गिल्ली-डंडा खेल रहे थे। कन्हैया ने गिल्ली मारी तो खिड़की के अंदर चली गई। अंदर गुरूजी, बड़नजी और बड़े गुरूजी बैठे थे। गिल्ली बहनजी की टेबिल पर जा गिरी – आगे क्या हुआ? सोच कर जोड़ो और इसका नाटक खेलो।

2. मुनिया, उसकी मां और पिताजी रेल से चारखेड़ा जा रहे थे। मुनिया की उम्र आठ साल से ऊपर थी, पर उन्होंने उसका टिकट नहीं लिया था। बताओ, आगे क्या हुआ होगा? नाटक खेलो।